देहरादून,पौड़ी-गढ़वाल व अल्मोड़ा से प्रकाशित | www.page3news.in | नगर संस्करण वर्ष 16 अंक: 137 पृष्ठ : 8 मूल्य: एक रूपए

देहरादून, eaxyokj 31 अगस्त 2021

सीएम ने आपदाग्रस्त इलाकों का हवाई सर्वेक्षण किया

पेज थ्री

कभी-कभी शराब पीना भी होता है अच्छा

मौसम अधिकतम 19.0⁰ न्यूनतम 6.0⁰ | 36254.57 | 2 समरसता के संकल्प से बहुधार्मिकता को छांव | 7 प्रेमसुख धाम में णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप कराया

सीएम धामी ने कहा, विद्यार्थियों को मुख्यमंत्री खिलाड़ी उन्नयन छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी

देहरादून, नगर संवाददाता। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रीय खेल दिवस के अवसर पर परेड ग्राउण्ड स्थित बहुउद्देशीय क्रीडा हॉल में महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कालेज देहरादुन के उदीयमान खिलाड़ियों, टेबल टेनिस एवं बेडमिंटन प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने राज्य में खेलों के प्रति अधिक से अधिक युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये अनेक घोषणायें भी की। मुख्यमंत्री ने स्वयं भी बेटमिंटन खेल कर प्रतियोगिता की शुरूआत की। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने घोषणा की कि 8 वर्ष से 14 वर्ष तक की आयु के 50–50 बालक बालिकाओं को उनकी खेल प्रतिभा के अनुसार चिन्हित कर उन्हें प्रति वर्ष मुख्यमंत्री खिलाड़ी उन्नयन छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी। खिलाड़ियों का दैनिक भत्ता बढ़ाकर रू0 225/– किया जायेगा। महिला खिलाड़ियों के खेल कौशल विकास हेतु जनपद उधमसिंह नगर में महिला स्पोर्ट्स कॉलेज स्थापित किया जाएगा। नेशनल गेम्स में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों को उत्तराखंड राज्य परिवहन निगम की बसों में निशुल्क यात्रा सुविधा प्रदान की जाएगी। महाविद्यालयों / व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु 5 प्रतिशत का उत्कृष्ट खिलाड़ी खेल कोटा प्रदान किया जाएगा। नेशनल गेम्स के पदक विजेताओं को भी एशियन / कामनवेल्थ / वर्ल्ड / ओलंपिक पदक विजेताओं की भाँति सरकारी सेवा प्रदान की जाएगी। खिलाड़ियों के प्रदर्शन में उत्कृष्टता लाने हेतु, वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक तकनीक को सुनिश्चित करने हेतु 'खेल विज्ञान केंद्र' की स्थापना राज्य खेल विकास संस्थान में की जायेगी। ओलंपिक खेलों में प्रदेश के खिलाड़ियों की प्रतिभागिता सुनिश्चित करने हेतु कोच की व्यवस्था की जाएगी। महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कॉलेज देहरादून में

'स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी' बनाए जाने का प्रयास किया जाएगा। नेशनल गेम्स / एशियन / कॉमनवेल्थ / वर्ल्ड / ओलम्पिक में प्रतिभाग करने वाले खिलाड़ियों को खेल दुर्घटनाओं / खेल इंजरी एवं अन्य खेल आकस्मिकताओं के दृष्टिगत बीमा / आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। राज्य में खेल सुविधाओं को बढ़ावा देने हेतु निजी क्षेत्र द्वारा स्पोर्ट्स कांपलेक्स, खेल अकादमी, स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी की स्थापना करने के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने हेतु 'मेजर ध्यानचंद निजी क्षेत्र खेल प्रतिभागिता प्रोत्साहन कोष की स्थापना की जाएगी।

जलियांवाला बाग कार्यक्रम में वर्चुवल शामिल हुए महाराज

देहरादून। सौंदर्यीकरण की वजह से डेढ़ साल से बंद जलियांवाला बाग आम जनता के लिए खोल दिया गया। पंजाब सरकार ने करोड़ों रुपये खर्च कर जलियांवाला बाग को संवारा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसका वर्चुअल उद्घाटन किया। इस मौके पर अन्य राज्यों के साथ साथ उत्तराखण्ड ने भी प्रतिभाग किया।

कोरोना एवं सौंदर्यीकरण की वजह से डेढ़ साल से बंद जलियांवाला बाग अब आम लोगों के लिए खोल दिया गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पुनर्निर्मित परिसर, संग्रहालय एवं दीर्घाओं के वर्चुअल उद्घाटन समारोह में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर पंजाब सहित अन्य राज्यों ने भी वर्चुवल कार्यक्रम में हिस्सा लिया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के विधान सभा सत्र में व्यस्त रहने की वजह से प्रदेश के पर्यटन, लोक निर्माण, सिंचाई, धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने भी इस कार्यक्रम में वर्चुवल प्रतिभाग किया।

मानसून सत्र के सफल संचालन के लिए स्पीकर अग्रवाल को दी बधाई

ऋषिकेश, क्राइम पेट्रोल संवाददाता। उत्तराखंड विधानसभा के 6 दिवसीय मानसून सत्र का शांति एवं सफलतापूर्वक संचालन करने के लिए उत्तराखंड विधानसभा अध्यक्ष प्रेमचंद अग्रवाल को क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों, मंडलो के विभिन्न मोर्चों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा बधाई एवं शुभकामनाएं दी गई। बैराज स्थित कैंप कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विधानसभा अध्यक्ष ने मानसून सत्र के सफलतापूर्वक संपन्न होने के लिए सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सभी माननीय सदस्यों का आभार व्यक्त किया।उन्होंने कहा कि पूरे सत्र के दौरान उनका प्रयास रहा कि सदन में पक्ष एवं विपक्ष के सभी विधायकों को उनके क्षेत्र से जुड़े विषयों को गंभीरतापूर्वक चर्चा करने का समान अवसर प्रदान हो। विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि इस सत्र के दौरान सदन में कई महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा हुई जिस पर सभी माननीय सदस्यों ने गंभीरता पूर्वक अपने विचार रखे।उन्होंने कहा कि सतत विकास लक्ष्य पर आधारित एक दिन की चर्चा में विधायकों के कई सुझाव प्राप्त हुए जिन पर आगे रणनीति बनाकर सभी प्रदेश के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होंगे। अवगत करा दे कि सदन में पक्ष एवं विपक्ष के विधायकों द्वारा श्री अग्रवाल के सदन संचालन कार्यशैली की बार–बार प्रशंसा की गई है।वहीं विधायकों द्वारा अध्यक्ष विवेकाधीन कोष को समान रूप से सभी विधानसभा क्षेत्रों के जरूरतमंद लोगों को वितरित किए जाने के लिए आभार भी व्यक्त किया गया। इस मौके पर बीजेपी के जिला महामंत्री सुदेश कंडवाल ने कहा की विधानसभा अध्यक्ष रहते हुए श्री अग्रवाल ने कई ऐतिहासिक कार्य किए हैं एवं मानसून सत्र उनकी अध्यक्षता में शांति एवं सुचारु पूर्वक संपन्न हुआ।साथ ही उनकी पहल पर सत्र के दौरान सदन में एक पूरा दिन उत्तराखंड के विकास के लिए सतत विकास लक्ष्य पर की गई चर्चा सराहनीय है। इस अवसर पर जिला महामंत्री सुदेश कंडवाल, मण्डल अध्यक्ष महिला मोर्चा ऋषिकेश उषा नेगी, मण्डल अध्यक्ष महिला मोर्चा वीरभद्र रजनी बिष्ट, मण्डल अध्यक्ष श्यामपुर समा पंवार, पुनिता भण्डारी आदि मौजूद थे

सम्पादकीय

अनाथों के नाथ

देश में कोरोना संकट का कहर भयावह है। मानवीय स्तर पर भी और आर्थिक स्तर पर भी। कहीं बच्चे अनाथ हो गये हैं तो कहीं परिवार का कमाऊ व्यक्ति असमय काल-कवलित हो गया है। एक बड़ा मानवीय संकट है, जिसको लेकर सत्ताधीशों से संवेदनशील व्यवहार की दरकार है। विडंबना यह है कि राज्य सरकारों द्वारा कोरोना के वास्तविक आंकड़ों से खिलवाड़ किया जा रहा है। सही आंकड़ों से अकर्मण्यता की पोल खुलती है। देशी-विदेशी एजेंसियां कह रही हैं कि मरने वालों और दर्ज आंकड़ों में फर्क है। राज्यों के विभिन्न दूर-दराज के इलाकों से उपचार के लिये आने वाले मरीजों को महानगरों के मृतकों के आंकड़ों में दर्ज नहीं किया जाता। हाल ये है कि प्रधानमंत्री तक को कहना पड़ा है कि राज्य सच्चाई के साथ आंकड़े सामने रखें। बहरहाल, इस निर्मम समय में दो मुख्यमंत्रियों के उम्मीद जगाने वाले बयान सामने आये। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि कोविड महामारी में माता-पिता की मौत के बाद अनाथ हो गये बच्चों को हर माह पांच हजार रुपये की पेंशन दी जायेगी। सरकार ऐसे बच्चों की मुफ्त शिक्षा व मुफ्त राशन की व्यवस्था भी करेगी। वहीं केजरीवाल सरकार ने भी अनाथ हुए बच्चों की शिक्षा व जीवन-यापन का खर्चा उठाने की घोषणा की है। निस्संदेह ऐसे बच्चों को सामने लाना समाज व सरकारों की जिम्मेदारी भी है। उम्मीद है कि सरकारें ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारी निभाएंगी। साथ ही सही आंकड़े सामने आयें। हालांकि, अभी कोरोना की दूसरी लहर का कहर जारी है और सही संख्या का पता महामारी के खात्मे के बाद ही चल पायेगा। फिलहाल तो सरकारों का ध्यान लोगों की जान बचाने पर होना चाहिए। सिर्फ बच्चे ही नहीं, ऐसे परिवारों की संख्या भी कम नहीं होगी, जिनके परिवार का कमाऊ सदस्य चला गया। ऐसी स्थिति बुजुर्गों के बेटे-बेटियों की भी हो सकती है। उन्हें भी सहायता कार्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। कोरोना संकट से तहस-नहस हुई अर्थव्यवस्था ने लाखों लोगों के रोजगार छीन लिये, उनके बारे में भी सोचा जाना चाहिए। उन्हें जीवन-यापन के लिये अवसर कैसे दिया जा सकता है। केंद्र सरकार को भी इसमें सहयोग करना चाहिए क्योंकि राज्यों की अर्थव्यवस्था पहले ही कोविड संकट में चरमरा गई है।

विश्वास के चमत्कार का स्वर्णिम फल

रेनू सैनी

इस समय देश में हर ओर महामारी का खौफ है। एक ही घर में महामारी ने पूरे परिवार को खत्म कर दिया है तो अंतिम संस्कार के लिए बारी का इंतजार करते परिजन शोक तक प्रकट करने में असमर्थ हैं। ऐसा क्यों हो रहा है? ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि लोगों के अंदर से विश्वास धूमिल हो चला है। जबकि विश्वास एक ऐसा चमत्कार है जो वास्तव में आसमान में न केवल सुराख कर सकता है, बल्कि हर बाजी को पलट सकता है। अगर विश्वास ही लोगों के अंदर से समाप्त होने लगेगा तो आशा की किरणें कहां से उत्पन्न होंगी? विश्वास के कारण ही आशा जीवित रहती है और उसकी किरणें संपूर्ण वातावरण में फैले तिमिर को अपने उजास से दूर भगाती हैं।

इतिहास गवाह है कि जब भी विश्व में उथलपुथल मची है तो विश्वास की पताका ने ही पूरी धरती को एक बार फिर से नए सिरे से बसाया है। विश्वास जादू सरीखा है। अगर सही तरह से कर्म करते हुए विश्वास बना रहे तो हर बाधा हट जाती है। उचित परिस्थितियों में विश्वास बनाए रखना सरल है, परीक्षा तो तभी होती है जब सब कुछ विपरीत दिशा में चल रहा हो और उस समय व्यक्ति के अंदर विश्वास बना रहे। विन्स लॉम्बार्डी कहते हैं कि 'खुद में विश्वास और अनुशासन रखना तब आसान होता है, जब आप विजेता हों, जब आप नम्बर वन हों। विश्वास और अनुशासन तो तब मायने रखता है, जब आप अभी तक विजेता न बन पाए हों।'

लॉम्बार्डी ने अनेक असफलताओं एवं समस्याओं को झेला। लेकिन उन्होंने अपने विश्वास को कदापि कम नहीं होने दिया। उनका फोर्डहैम यूनिवर्सिटी में खिलाड़ी के रूप में बेहद सफल कॅरिअर रहा। वे आक्रमण पंक्ति में बतौर राइट गार्ड खेलते थे, जिसे 'सेवन ब्लॉक्स ऑफ ग्रेनाइट' कहा जाता था। वर्ष 1937 में जब उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की तो अचानक ही महामंदी चरम पर पहुंच गई। ऐसे में किसी भी व्यक्ति के लिए रोजगार एवं व्यवसाय के अवसरों की संख्या नगण्य रह गई। लॉम्बार्डी इस दौरान अनेक नौकरियों के लिए संघर्ष करते रहे। उन्हें 1939 में एक हाई स्कूल की फुटबॉल टीम में असिस्टेंट कोच की नौकरी मिल गई।

उसके बाद की बातें और कोच के रूप में उनका रिकॉर्ड एक किंवदंती बन चुका है, पर उनके बारे में बेहद दिलचस्प बात यह है कि उन्होंने अपने कॅरिअर की एनएफएल वाली पारी 1954 तक यानी कि अपने कॅरिअर के लगभग 15 सालों तक प्रारंभ नहीं की थी। वे अपने खिलाड़ियों के साथ बेहद कठोर रुख अपनाया करते थे और उनके परिणाम हमेशा ऐसे रहते थे कि लोग दांतों तले अंगुली दबाते रह जाते थे। उनके अनिश्चित और अकल्पनीय परिणामों ने उन्हें हॉल ऑफ फेम में पहुंचा दिया था और उनका नाम सुपर बाउल ट्रॉफी पर आ गया था। उनके पूरे एनएफएल कॅरिअर में एक भी सीज़न ऐसा नहीं रहा, जब वे पराजित रहे हों। इसका कारण वे हमेशा अपने विश्वास को देते रहे। खुद में उनका विश्वास इतना ज्यादा था कि यह उनके इर्द-गिर्द रहने वाले हर व्यक्ति में गजब का विश्वास फूंक देता था।

गजब के विश्वास के कारण ही उन्होंने ग्रीन बे पेकर्स के एक बेहद कमजोर खिलाड़ी को विश्व के महान खिलाड़ी में परिवर्तित कर दिया था। एक बार ग्रीन बे पेकर्स के अभ्यास मैच के दौरान लॉम्बार्डी ने एक गार्ड को पुल आउट करने में असफल देखकर उसे निकाल दिया और बोले, 'तुम एक निहायत ही घटिया फुटबाल खिलाड़ी हो।' यह सुनकर खिलाड़ी की आंखों में आंसू आ गए। उसे उदास देखकर लॉम्बार्डी उसके पास पहुंचे और बोले, 'माना कि तुम अभी अच्छा नहीं खेलते हो, पर मुझे विश्वास है कि तुम एक महान खिलाड़ी बन सकते हो।' इसके बाद गार्ड का अभ्यास निरंतर चलता रहा और आज दुनिया उस गॉर्ड को महान फुटबॉल खिलाड़ी जैरी क्रैमर के रूप में जानती है। हम लोग भी कोरोना महामारी से अभी जीते नहीं हैं। ऐसे में अनुशासन और विश्वास दोनों ही अनिवार्य हैं। अगर अनुशासन ढीला रहा, लोगों ने लापरवाही दिखाई तो विश्वास का टूटना भी लाजिमी है। विश्वास एक ऐसा चमत्कारी फल है जो सद्कर्म के साथ ही फलता-फूलता है। कर्म के बिना विश्वास पंख वाली उस चिड़िया की तरह है जो धरती पर चल सकती है, फुदक सकती है लेकिन आसमान में कभी उड़ नहीं सकती। आसमान की ऊंचाइयों को छूने के लिए अनुशासन, सद्कर्म, आत्मविश्वास, आशा और विश्वास बेहद जरूरी हैं। व्यक्ति प्रकृति का अत्यंत बुद्धिमान प्राणी है। वह अपनी मेहनत और विश्वास के साथ हर समस्या से न केवल अच्छी तरह जूझना जानता है बल्कि उसका तोड़ निकालना भी जानता है। महामारी का तोड़ भी धीरे-धीरे कर्मठ व्यक्तियों की मेहनत से बाहर आ रहा है लेकिन उसके लिए संपूर्ण मानव जाति को एकजुट होना होगा। महामारी को रोकने के लिए बनाए गए नियमों का जिम्मेदारी के साथ पालन करके हम विश्वास के चमत्कार का स्वर्णिम फल जल्द ही प्राप्त कर सकते हैं।

समरसता के संकल्प से बहुधार्मिकता को छांव

विश्वनाथ सचदेव

उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में एक छोटा-सा गांव है राजनपुर। कुल 16 की आबादी वाले इस गांव में सिर्फ एक मुस्लिम परिवार है। बाकी गांव वालों की तरह ही खेती ही इस परिवार का आधार है, और यह परिवार हिंदू-बहुल पूरे गांव को अपना परिवार मानता है। हाल ही में हुए ग्राम पंचायत के चुनाव में राजनपुर के लोगों ने एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत किया है-गांव ने इस इकलौते मुस्लिम परिवार के मुखिया को अपना मुखिया चुना है। कुल 6 मतदाताओं में से 2 ने हाफिज़ अज़ीमुद्दीन के पक्ष में वोट देकर कौमी एकता की एक ऐसी मिसाल पेश की है जो बाकियों के लिए भी प्रेरणा बन सकती है। यह पहली बार नहीं है जब इस इकलौते परिवार का कोई सदस्य गांव का प्रधान बना है। बरसों पहले अज़ीमुद्दीन के पिता भी गांव के प्रधान चुने गये थे।

अज़ीमुद्दीन इस जीत को 'अपनी ईदी' मानते हैं। जो उनके ग्राम-परिवार ने उन्हें दी है। छह उम्मीदवार और थे मैदान में। सब हिंदू। पर गांव ने एक मुसलमान को अपना मुखिया चुना। ज्ञातव्य है कि गांव के कई हिंदू परिवारों ने अज़ीमुद्दीन के लिए व्रत भी रखा था और उनके जीत जाने पर गांव भर में मिठाई बंटी!

वैसे एक पंथ-निरपेक्ष देश में यह एक सामान्य बात होनी चाहिए। इसका एक उदाहरण के रूप में सामने रखा जाना कुल मिलाकर उस वातावरण पर एक सार्थक टिप्पणी है, जो हमारे देश की राजनीति ने बना दिया है। भले ही हमारा संविधान समता और बंधुता की दुहाई देता हो, पर राजनीतिक स्वार्थों के चलते धर्म और जाति आज भी हमारी राजनीति के हथियार बने हुए हैं। वैसे, भगवान राम की नगरी अयोध्या में पहले भी चुनाव में मुस्लिम उम्मीदवार जीते हैं, पर पिछले एक अर्से में धर्म के आधार पर समाज के बंटवारे के ऐसे कई उदाहरण सामने आये हैं जो देश को परेशान करने वाले हैं।

पर सवाल इन उदाहरणों का नहीं है, सवाल उस राजनीतिक माहौल का है जो पिछले एक अरसे से देश-समाज में गहराता जा रहा है। धार्मिक आधार पर हुए देश के बंटवारे के बावजूद हमारे संविधान-निर्माताओं ने किसी भी धर्म को राजधर्म स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। यह उनके विवेक का ही परिणाम है कि हमने एक ऐसे देश की परिकल्पना को साकार किया जहां धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव स्वीकार्य नहीं है। हमने सर्व धर्म समभाव के दर्शन को स्वीकारा। हमारा संविधान इस बात की गारंटी देता है कि यहां हर नागरिक को अपने धार्मिक विश्वास के साथ जीने की आज़ादी है। यह सही है कि देश में लगभग अस्सी प्रतिशत आबादी हिंदुओं की है पर इसके बावजूद शेष बीस प्रतिशत मुसलमानों, ईसाइयों और सिखों आदि को वह सब अधिकार प्राप्त हैं जो एक स्वतंत्र देश के नागरिक को मिलने चाहिए। लेकिन, सही यह भी है कि हिंदुस्तान को हिंदुओं का स्थान मानने वाली मानसिकता भी जब-तब सिर उठा लेती है। धर्म के नाम पर राजनीतिक हानि-लाभ का गणित लगाने वालों को इस बात से शायद कोई अंतर नहीं पड़ता कि उनकी सोच से हमारे देश की महानता मलिन ही होती है।

बहरहाल, धर्म को हथियार बनाने की यह प्रवृत्ति चुनावों के समय अक्सर अपना सिर उठा लेती है। हाल ही में हुए बंगाल के चुनाव में धर्म के आधार पर वोटों का बंटवारा किसी से छिपा नहीं है। मुख्य मुकाबला भारतीय जनता पार्टी और तृणमूल कांग्रेस में था- और दोनों एक-दूसरे पर धर्म के आधार पर वोट जुटाने का आरोप लगा रहे थे। भाजपा का कहना था कि ममता की पार्टी ने मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति अपनाई है और तृणमूल वाले लगातार यह बात कहते रहे कि भाजपा राम के नाम पर हिंदुओं के वोट पाने की कोशिश कर रही है। दुर्भाग्य से, दोनों के आरोप बेबुनियाद नहीं हैं। यह सही है कि भाजपा को हराने के लिए पश्चिम बंगाल के मुसलमानों ने तृणमूल कांग्रेस को वोट दिये। पर यह भी उतना ही सही है कि 'जयश्री राम' को चुनावी नारा बनाकर भाजपा ने भी धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण की नीति अपनायी।

ध्रुवीकरण की इस नीति को दुर्भाग्यपूर्ण ही माना-कहा जा सकता है। राजनीतिक स्वार्थों के लिए जिस तरह समाज को धर्म के आधार पर बांटा जा रहा है, वह किसी भी दृष्टि से देश के हित में नहीं है। हमारा भारत महान है तो इसलिए नहीं कि यहां किसी धर्म-विशेष का बोलबाला है। भारत की महानता इसमें है कि यहां हर धर्म के व्यक्ति को अपने विश्वासों के आधार पर जीने का अधिकार है। सांप्रदायिक भाईचारा हमारी एक पहचान भी है और ताकत भी। बहुजन हिताय नहीं, सर्वजन हिताय में विश्वास करता है हमारा भारत। 'ईश्वर- अल्लाह तेरा नाम' के मंत्र के साथ सबकी सन्मति की कामना करने वाली हमारी मान्यता मंदिर-मस्जिद के बंटवारे की नहीं, सभी धार्मिक स्थलों को आदर की दृष्टि से देखने का आग्रह करती है। बहुधर्मिता हमारी कमज़ोरी नहीं, हमारी ताकत है। बहुलतावाद को किसी भी रूप में स्वीकारने का मतलब अपनी इस ताकत को कमज़ोर करना है।

अयोध्या जिले के राजनपुर गांव के मुट्ठी भर लोगों ने धर्म के नाम पर समाज के बंटवारे को अस्वीकार करते हुए सारे देश को एक चुनौती दी है। यह चुनौती धार्मिक आधार पर बंटवारे को अंगूठा दिखाने की है। उस पूरे गांव में सिर्फ एक मुस्लिम परिवार होने के बावजूद हाफिज़ अज़ीमुद्दीन का प्रधान चुना जाना सांप्रदायिकता की राजनीति करने वालों के गाल पर एक तमाचा है। अज़ीमुद्दीन के घर पर ईद पर सिवैया बनती हैं, और होली पर गुजिया भी। सिवैयों और गुजिया की यह परंपरा बनी रहे, फले-फूले, इसी में देश का भला है।

आवश्यकता धार्मिक सद्भाव के मर्म को समझाने की है। इस देश के नागरिक किसी भी धर्म को मानने वाले हो सकते हैं, पर इस बात को कभी नहीं भुलाया जाना चाहिए कि मूलत: हम सब भारतीय हैं। मैं कहना चाहूंगा, मूलत: हम इनसान हैं।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेशवासियों को दी 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' की बधाई

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' के पावन पर्व पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई दी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने मनुष्य को निष्काम कर्म के लिए सदैव समर्पित रहने, दीन–दुखियों एवं समाज के उपेक्षित वर्ग के कल्याण का संदेश दिया है। उनका जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणादायी है।

उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद् भगवद् गीता में दिये गये दिव्य संदेश में मानव जाति का कल्याण निहित है, यह पावन पर्व हमें भगवान श्री कृष्ण की शिक्षाओं का स्मरण करने और सार्वभौमिक भाईचारे और शांति की भावना को मजबूत करने का अवसर भी प्रदान करता है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी से कोरोना के दृष्टिगत आवश्यक सावधानियां बरतते हुए 'श्रीकृष्ण जन्माष्टमी' का त्यौहार मनाने की भी अपील की है।

रानीपोखरी के क्षतिग्रस्त पुल मामले में बाहरी एजेंसी से जांच जरूरी बताया

देहरादून। ऋषिकेश–देहरादून हाईवे पर 27 अगस्त को रानीपोखरी पुल टूटकर ध्वस्त हो गया था। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत रविवार को रानीपोखरी के धरासायी पुल को देखने के लिए पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि इतना अधिक पानी भी जाखन नदी में नहीं आया है, जिससे पुल गिर जाए। इसकी प्रमुख वजह पुल के दोनों ओर हो रहा खनन है। उन्होंने कहा कि पुल के नीचे भी काफी मात्रा में खनन हुआ है। ऐसे में इस पूरे प्रकरण की जांच किसी बाहरी एजेंसी से करवानी चाहिए। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि जांच टीम से काम नहीं चलेगा। किसी बाहर की एक्सपर्ट टीम से इसकी जांच करानी चाहिए और जानकारी में आया है कि एक और सोडा सरोली का पुल भी खतरे की जद में है। हरीश रावत ने कहा कि ये बेहद गंभीर मामला है और उत्तराखंड की जनता के लिए भी चिंता का विषय है। बता दें कि, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने भी रानीपोखरी के टूटे पुल का हवाई सर्वेक्षण किया। उत्तराखंड के ऋषिकेश–देहरादून हाईवे पर 27 अगस्त को रानीपोखरी पुल टूटकर ध्वस्त हो गया था। इसके चलते इस मार्ग पर आने जाने वाले लोगों को अब काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। पुल का एक हिस्सा गिर जाने के बाद अब प्रशासन ने पुल पर आवाजाही को पूरी तरह से बंद कर दिया है।

आई.टी.सी. हरिद्वार के प्रतिनिधिमंडल ने सीएम से की भेंटवार्ता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से रविवार को मुख्यमंत्री आवास में आई.टी.सी. हरिद्वार के प्रतिनिधिमंडल ने भेंट वार्ता की। आईटीसी द्वारा सीएचसी रुड़की एवं सीएचसी पिथौरागढ़ हेतु 15–15 आईसीयू बेड सहित अन्य मेडिकल इक्विपमेंट्स प्रदान किए गए। इसके साथ ही एक्स रे मशीन व अल्ट्रासाउंड मशीन भी चिकित्सा क्षेत्र हेतु प्रदान की गई। आईटीसी द्वारा अवगत कराया गया कि 933 एल.पी.एम. की क्षमता का एक ऑक्सीजन जनरेटर प्लांट मेला अस्पताल हरिद्वार में उनके द्वारा लगाया जा रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने आईटीसी द्वारा दिये जा रहे सहयोग की सराहना की। उन्होंने कहा कि कोविड की रोकथाम तथा आपदा से बचाव के लिये किये जा रहे प्रयासों में सभी संस्थानों का काफी सहयोग मिल रहा है। वर्तमान में कोरोना महामारी नियंत्रण की स्थिति में है, संभावित तीसरी लहर के दृष्टिगत पूरी तैयारियां राज्य सरकार द्वारा कर ली गई है। इस अवसर पर स्वास्थ्य महानिदेशक डॉ. तृप्ति बहुगुणा, आईटीसी के चीफ मैनेजर कौशिक मुखर्जी, आईटीसी हरिद्वार के एचआर हेड अल्ताफ हुसैन, बलवंत सिंह ब्रिजवाल, फाइनेंस हेड अक्षय मोदी एवं अरुण सास्वत उपस्थित थे।

सीएम ने आपदाग्रस्त इलाकों का हवाई सर्वेक्षण किया

नगर संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गढ़वाल मण्डल के देवप्रयाग, तोताघाटी, तीनधारा, कौड़ियाला, ऋषिकेश, रानीपोखरी, नरेन्द्रनगर, फकोट एवं चंबा के आपदा ग्रस्त इलाक़ों का हवाई सर्वेक्षण किया। मुख्यमंत्री के साथ कैबिनेट मंत्री डॉ धन सिंह रावत व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक, मुख्य सचिव एस एस संधु भी थे।

अनुसूचित जाति आयोग उत्तराखण्ड की वेबसाइट का विमोचन किया

नगर संवाददाता

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने रविवार को मुख्यमंत्री आवास में अनुसूचित जाति आयोग उत्तराखण्ड की वेबसाइट का विमोचन किया।

इस अवसर पर उत्तराखण्ड अनुसूचित जाति आयोग के अध्यक्षमुकेश कुमार ने मुख्यमंत्री को बताया कि आम जन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए पीड़ित को तत्काल न्याय मिले इस उद्देश्य को लेकर ऑनलाईन शिकायत दर्ज करने के लिये यह वेबसाईट जारी की गई है। अब प्रदेश के किसी भी हिस्से से अनुसूचित जाति का कोई भी व्यक्ति अपनी समस्या को वेबसाईट पर दर्ज कर सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि अनुसूचित जाति व जनजाति के विकास हेतु राज्य सरकार प्रतिबद्ध है।

मॉनसून के मौसम में लगाएं इस रंग की लिपस्टिक

मॉनसून के दिनों में मौसम के बदलते मिजाज का असर हमारी लुक पर भी पड़ता है और ई वजह से हमें लिपस्टिक के कलर पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत होती है।

मॉनसून के मौसम में आपको वॉटरप्रूफ लिपस्टिक का ही इस्तेमाल करना चाहिए वरना आपके फैशन सेंस का लोगों के सामने मज़ाक भी बन सकता है।

इस मौसम में बेवक्त की बारिश आपके लिप कलर को खराब कर सकती है इसलिए

वॉटरप्रूफ लिपस्टिक का ही इस्तेमाल करेंगी तो बेहतर होगा।

लिपस्टिक चुनते समय सबसे पहले जरूरी बात होती है कि आप कौन-से रंग के कपड़े पहनने वाली हैं।

जी हां, हमेशा अपने कपड़ों से मैचिंग की ही लिपस्टिक लगानी चाहिए वरना आपकी लुक बिगड़ भी सकती है। इसलिए जब भी बाहर जाएं तो अपने कपड़ों से मैचिंग की लिपस्टिक ही लगाएं।

ऐसे कलर्स चुनें जिन्हें आप सालभर किसी भी मौसम में और किसी भी जगह पर लगाकर जा सकती हों। अपने लिए लिप कलर चुनते समय आपको मौसम और जिस जगह आपको वो कलर लगाकर जाना है उसका ध्यान रखना चाहिए।

आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि तूफानी और बारिश के मौसम में आपको किस तरह की लिपस्टिक या लिप कलर लगाने चाहिए। इन्हेंर आप कभी भी, किसी भी वक्त और किसी भी जगह लगाकर जा सकती हैं।

सबसे खास बात ये है कि ये लिप हर स्किन टोन और लिप शेप को सूट करेगी। तो चलिए फिर देर किस बात की अभी जानते हैं मॉनसून के लिप कलर्स के बारे में।

नैचुरल न्यूड लिप कलर

कई महिलाओं को सिंपल रहने से ज्यादा खूब सारा मेकअप करके बाहर निकलना पसंद होता है। ये महिलाएं दूसरों को आकर्षित करने के लिए संज-संवरकर ही घर से निकलना पसंद करती हैं।

ऐसी महिलाओं अपनी लुक में चार चांद लगाने के लिए नेचुरल न्यूड लिप कलर लगाना चाहिए। नैचुरल न्यूड लिप कलर आपके नैचुरल लिप कलर को ओवरकोट नहीं करेगा। नैचुरल न्यूड लिप कलर खरीदते समय आपको ग्लॉसी लिपस्टिक चुननी चाहिए।

मटैलिक लिप कलर

शहरों में लड़कियां लिपस्टिक के मामले में मटैलिक कलर काफी पसंद करती हैं। मॉनसून के महीने में मटैलिक कलर की लिपस्टिक आपकी सुंदरता को और भी ज्यादा निखारने का काम करती है। इससे आपके होंठ भी हाईलाईट होते हैं।

अगर आप मटैलिक लिप रेंज में जैली कोटिंग चाहती हैं तो आपको इसके शैंपेन शेड को चुनना चाहिए। लिपस्टिक के सेंटर में शैंपेन शेड लगाएं और किनारों पर अपना बेसिक लिप कलर लगाएं। लिपस्टिक लगाने से पहले होठों पर कंसीलर जरूर लगाएं। इससे मटैलिक लिपस्टिक का लुक एकदम परफैक्ट आएगा।

कोकोआ चॉकलेटी लिप कलर रेंज कोकोआ चॉकलेटी लिप कलर की रेंज में आपको भूरे यानि ब्राउन कलर की लिपस्टिक मिलेगी। इस रंग की लिपस्टिक की सबसे खास बात है कि ये किसी भी स्किन टोन के साथ फब जाती है।

आपका रंग चाहे गोरा हो या सांवला, ब्राउन बेस्ड लिप कलर हर रंग पर जंचता है। मॉनसून में कोकोआ चॉकलेटी लिप कलर को परफैक्ट लुक देने के लिए वॉटरप्रूफ लिपस्टिक ही चुनें। ऑफिस जा रहीं हैं तो कोकोआ चॉकलेटी कलर का डबल कोट लगाएं, वहीं अगर किसी पार्टी या मीटिंग के लिए जा रहीं हैं तो जितना गहरा कोकोआ चॉकलेटी लिपस्टिक का रंग होगा उतनी ही ज्यादा चमक आपके चेहरे की बढ़ेगी।

लैवेंडर लिपस्टिक लैवेंडर लिपस्टिक में इतनी सारी वैरायटियां हैं कि आप कंफ्यूज़ हो जाएंगी। लैवेंडर लिपस्टिक में लाइट प्लम से लेकर डीप पर्पल तक सभी खूबसूरत रंग मिल जाएंगें। मॉनसून के महीने में ये रंग काफी अलग और अनोखे दिखते हैं। इससे आपके होंठ शेप में भी दिखते हैं। अगर आपने लैवेंडर लिप कलर का काफी हल्का शेड खरीद लिया है तो परफैक्ट पार्टी लुक पाने के लिए आप इसका ओवरकोट भी लगा सकती हैं। अगर आपके पास गहरा पर्पल शेड है और आप हल्के रंग की लिपस्टिक चाहती हैं तो आपको इसे लगाने से पहले होठों पर थोड़ा लूज़ पाउडर लगाना चाहिए।

सदाबहार रहने वाला लाल रंग साल के किसी भी दिन आप लाल रंग की लिपस्टिक लगा सकती हैं। इस रंग की खास बात है कि आप ऑफिस या पार्टी से लेकर घर के किसी निजी कार्यक्रम में भी इसे लगाकर जा सकती हैं। रैड लिपस्टिक तभी लगाएं जब आप इसको लेकर कॉन्फिडेंट हों। अगर आपको ज़रा भी लग रहा है कि ये रंग आपको सूट नहीं कर रहा तो इसे हटा दें।

दो लिप कलर आजकल दो लिप कलर्स का फैशन भी खूब चल रहा है। इस ट्रेंड में आप अपने होंठों पर दो रंग की लिपस्टिक लगा सकती हैं। सुनने में थोड़ा अजीब लगता है लेकिन ये काफी अनूठा ट्रेंड है। इसमें आप एक ही रंग के दो शेड या फिर कंट्रास्ट शेड की लिपस्टिक लगा सकती हैं। बाहर जाने से पहले ये एक्सपेरिमेंट खुद पर ही करके देखें। हो सकता है कि ये आपको सूट ना करे इसलिए पहले इसे घर पर ही ट्राई करें। ब्लैक एंड व्हाइट की जगह दो कंट्रास्टिंग शेड चुनेंगी तो ज्यादा बेहतर होगा।

मॉनसून में बीमारियों से बचना है तो इन बातों का रखें ध्यान

झुलसाने वाली गर्मी के बाद बारिश का मौसम राहत तो देता है लेकिन अपने साथ लेकर आता है कई तरह की मौसमी बीमारियां।

बारिश में भीगना सभी को अच्छा लगता है लेकिन थोड़ी से असावधानी से इंफेक्शन और बीमारियों का भी खतरा रहता है। लिहाजा इस मौसम में बीमारी से बचने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें-

कम नमक का इस्तेमाल करें

इस मौसम में हमारे शरीर का मेटाबॉलिक रेट कम हो जाता है। ऐसे में अगर आपका खानपान सही न हो तो बीमार पड़ने की आशंका बनी रहती है।

ऐसे में बहुत भारी और नमक वाले खाने से बचें। इससे शरीर में वॉटर रिटेंशन और ब्लोटिंग होगी और आपको हर वक्त भारीपन महसूस होगा। लिहाजा खाने में कम नमक का इस्तेमाल करें।

जंक फूड और स्ट्रीट फूड से बचें

इस सीजन में बाहर का खाना खासतौर पर जंक फूड और स्ट्रीट फूड खाने से बचें क्योंकि ऐसे खाने के दूषित होने का खतरा ज्यादा रहता है। पेट में होने वाली किसी भी तरह की गड़बड़ी से बचने के लिए घर पर बना फ्रेश खाना ही खाएं।

माइल्ड शैंपू यूज करें

मॉनसून के सीजन में वैसे भी बाल बहुत ज्यादा गिरते हैं लिहाजा हेयरफॉल और कील-मुंहासों से बचने के लिए माइल्ड शैंपू और सोप का इस्तेमाल करें।

गीले कपड़े स्किन को नुकसान पहुंचा सकते हैं

बारिश के मौसम में कपड़े सूखने में भी काफी वक्त लगता है। इसलिए इस बात का ध्यान रखें कि जब तक कपड़े की अंदरूनी सतह पूरी तरह से सूख न जाए कपड़े न पहनें वरना कपड़े की सीलन आपकी स्किन को नुकसान पहुंचा सकती है।

अभिव्यक्ति की आजादी की हो रक्षा

विश्वनाथ सचदेव

अब इक्कीस साल की दिशा पर देशद्रोह का आरोप लगा है। बेंगलुरु की इस युवती का यह प्रकरण क्या रूप लेता है, यह तो पुलिस की अगली कार्रवाई और अदालत के रुख पर ही निर्भर करता है, लेकिन पिछले कुछ अर्से में देश में 'देशद्रोह' के मामलों में जो गति आयी है, वह सचमुच चिंता का विषय होनी चाहिए। आंकड़े बताते हैं कि जहां सन् 2016 में 'देशद्रोह' के कुल 35 मामले सामने आये थे, वहीं 2019 में यह संख्या बढ़ कर 93 हो गयी-अर्थात 165 प्रतिशत की वृद्धि।

देशद्रोह के ये आरोप धारा 124-ए के अंतर्गत दर्ज होते हैं। यदि इनके साथ यू.ए.पी.ए को देखा जाये तो वर्ष 2019 में इसके अंतर्गत 1226 मामले दर्ज हुए थे। सन् 2016 की तुलना में यह 33 प्रतिशत की वृद्धि है। ज्ञातव्य है कि धारा 124-ए के अंतर्गत तीन साल से लेकर आजीवन कारावास की सज़ा हो सकती है और यू.ए.पी.ए अर्थात गैरकानूनी गतिविधि (रोकथाम) कानून के अंतर्गत मामलों में सामान्यतः अदालतें ज़मानत भी नहीं देतीं।

आकड़े बहुत कुछ कहते हैं, पर बहुत कुछ आंकड़ों के घटाटोप में छिप भी जाता है। मसलन 124-ए के अंतर्गत जिन लोगों को देशद्रोह का आरोप झेलना पड़ रहा है, उनमें विद्यार्थियों से लेकर पत्रकार, बुद्धिजीवी, लेखक, कलाकार, पर्यावरण-कार्यकर्ता तक शामिल हैं। वर्ष 2019 में देशद्रोह के नौ प्रतिशत और यू.ए.पी.ए के ग्यारह प्रतिशत पिछले मामले पुलिस ने 'प्रमाण' के अभाव में वापस ले लिये थे। यह तथ्य भी गौर करने लायक है कि वर्ष 2019 में 'देशद्रोह' के 3.3 प्रतिशत मामलों में ही सज़ा सुनायी गयी थी, जबकि यू.ए.पी.ए मामलों में यह प्रतिशत लगभग उनतीस था। यहीं इस तथ्य की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि 'देशद्रोह' एक बहुत ही गंभीर अपराध है और चौबीसों घंटों के समाचार-चैनलों के युग में किसी को बार-बार देशद्रोह का आरोपी बताना संबंधित व्यक्ति की सामाजिक छवि को क्षति पहुंचा सकता है।

इस संदर्भ में पिछले कुछ सालों में जो एक और प्रवृत्ति सामने आयी है, वह सरकार के विरोध को देशद्रोह मान लेने की है। अक्सर इस बात को भुला दिया जाता है कि देश और सरकार एक-दूसरे के पर्यायवाची नहीं हैं। सरकार की आलोचना करने का मतलब देश के प्रति गद्दारी करना नहीं हो सकता। जनतांत्रिक व्यवस्था में हम देश का कामकाज चलाने के लिए सरकार चुनते हैं। यह सरकार घोषित नीतियों और देश के संविधान के अनुसार शासन चलाती है। नागरिक का अधिकार है और कर्तव्य भी कि वह अपने द्वारा चुनी हुई सरकार की नीतियों, और उसके कार्यों की आलोचना कर सके। जनतंत्र में विरोध एक पवित्र और महत्वपूर्ण शब्द है।

सच बात तो यह है कि यह एक शब्द मात्र नहीं है, यह एक विचार है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता इसी विचार को परिभाषित करती है। फ्रांसीसी दार्शनिक वाल्तेयर ने कहा था कि 'हो सकता है मैं आप से असहमत होउं, पर अपनी बात कहने के आपके अधिकार की रक्षा मैं अपनी अंतिम सांस तक करूंगा।' उनका यह कथन जनतांत्रिक मूल्यों-आदर्शों को उजागर करने वाला है। विरोध या असहमति जनतंत्र की भावना और परिकल्पना का एक आधार है। इस आधार की उपेक्षा का मतलब जनतांत्रिक आदर्शों को अस्वीकारना है।

इस परिप्रेक्ष्य में हमें देखना होगा कि आज हमारी सरकारें असहमति को किस दृष्टि से लेती हैं। सत्तारूढ़ दल के नेताओं के बयान अक्सर यह अहसास कराने वाले होते हैं कि उनके विचारों के विरोधी देश-विरोधी हैं। यही नहीं, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के नाम पर किसी को भी राष्ट्र-विरोधी करार देने की एक खतरनाक प्रवृत्ति भी लगातार उभर रही है। इस प्रवृत्ति के निहितार्थों को समझना ज़रूरी है। भारत जैसे बहुधर्मी, बहुभाषीय, बहुजातीय देश में इस तरह की प्रवृत्ति का होना सामाजिक ताने-बाने को कमज़ोर ही बनाता है। न तो राष्ट्र-प्रेम पर किसी का एकाधिकार हो सकता है और न ही राष्ट्र के प्रति निष्ठा के नाम पर किसी को गद्दार कहा जा सकता है।

देशद्रोही वह है जो राष्ट्र का अहित करता है, वह नहीं जो सरकार के कार्यों और मंतव्यों पर सवाल उठाता है। इस बात से कैसे इनकार किया जा सकता है कि हित-अहित की अवधारणा पर मतभेद हो सकता है। जनतंत्र में इस संदर्भ में विचार-विमर्श का रास्ता अपनाया जाता है। संसद में, विधानसभा में, पंचायत में विचारों का आदान-प्रदान होता है, तर्क-वितर्क होता है, तब निर्णय लिये जाते हैं। इस समूची प्रक्रिया में विरोधी-विचार को राष्ट्र-द्रोह मानने के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता।

सच तो यह है कि जब हम गुलाम थे तो अंग्रेज़ों ने अपने विरोध को राष्ट्र-विरोध मानने का षड्यंत्र किया था। आज से 184 वर्ष पहले, सन् 1837 में आई.पी.सी. के प्रारूप में देशद्रोह की चर्चा सुनी गयी थी। मैकाले ने तब कहा था-कोई भी जो सरकार के प्रति असंतोष फैलाता है, उसे तीन वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सज़ा दी जा सकती है। वर्ष 1860 में इस संबंध में कानून भी बना, पर उसमें भी राष्ट्र-द्रोह वाली धारा नहीं थी। दस साल बाद 1870 में यह 'ग़लती' सुधारी गयी और दंड संहिता में धारा 124-ए जोड़ी गयी। अंग्रेजों ने तो अपने हित के लिए यह धारा जोड़ी थी, तब उन्होंने अपनी सरकार को देश का पर्याय माना था। दुर्भाग्य से आज भी इस तरह की सोच पल रही है। सन् 1860 में इस धारा का न जुड़ना अंग्रेजों के लिए एक ग़लती थी, और स्वतंत्र भारत में इस धारा का जुड़ा रहना 'गलती' है- सच तो यह है कि यह जनतंत्र के प्रति अपराध है। गुलाम भारत में सबसे पहले यह धारा बाल गंगाधर तिलक के खिलाफ काम में ली गयी थी।

इन 10 तरीकों से करेंगे होटल बुक तो बचेंगे पैसे

डायरेक्ट होटल की वेबसाइट से

अक्सर देखा जाता है कि बहुत की रजिर्वेशन वाली वेबसाइट कई तरह के बेस्ट प्राइस बुकिंग ऑफर्स देती हैं। जबकि हकीकत में ये वेबसाइट ग्राहकों की जेब पर लोड डालती हैं। एक तरह से बिचौलिए की भूमिका में होती हैं। ऐसे में बेहतर होगा डायरेक्ट होटल की वेबसाइट से बुकिंग कराएं।

यह टेक्निक भी मजेदार

यह तकनीकि हमेशा तो नहीं लेकिन ज?यादातर काम कर सकती है। अगर आप अगली वैकेशन के लिए प्लान कर रहे हैं तो पहली रात के लिए होटल में हायर प्राइस में रूम बुक करें। इसके बाद अगली रात के लिए लो प्राइस में बुकिंग कराएं। ऐसे में अगर दूसरे दिन होटल पूरा भरा नहीं हैं तो वे आपको उसी हायर प्राइस वाले रूम में लो प्राइस में रुकने के लिए बोल देंगे। इससे उनकी क्लनिंगि कॉस्ट बचती है।

यह आइडिया काफी इफेक्टिव होगा। कुछ भी करने से पहले सबसे पहले इंटनेट पर एक प्रोमो कोड ढूंढ ले। यह आपकी ट्रिप में काफी काफी मददगार होगा। इसके जरिए आप होटल, शहर और तारीख के जरिए बुक्गिि आदि की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

छूट के लिए पात्र हैं या नहीं

सबसे पहले ये देखना जरूरी होता है कि आपको डिLकाउंट मिलेगा या नही। इसके लिए आपको इस पर ध्यान देना होगा कि आप जिस कंपनी में काम कर रहे हैं उसके आधार पर आपको छूट मिलेगी या नही। अधिकांश कंपनियों के टूर वाले कर्मचारियों को होटल्स में डिस्काउंट ऑफर मिलते हैं।

पैकेज डील पहले देख लें

कभी कभी होटल और हवाई सफर अलग अलग बुक कराने से सस्ता पड़ता है।

वहीं कई बार ये एक साथ कराने में और ज्यादा सस्ता पड़ जाता है। ऐसे में जरूरी है कि होटल बुकिंग से पहले आप बुक नाऊ पर क्लिक करके इन दोनों में तुलना जरूर कर लें।

क्रेडिट कार्ड का उपयोग करें

होटल बुकिंग में कोशिश करें कि किसी ऐसे क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करें जो होटल से ही संबद्ध हो। इससे आपको होटल की तरफ से रिजर्वेशन फीस से लेकर अन्य कई चीजों में छूट का लाभ मिलेगा।

ट्रैवल मिडवीक की कोशिश करें

कोशिश करे कि आप सफर पर सप्ताह के बीच में निकलें क्योंकि इन टाइम पीरियड में होटल आसानी से उचित दामों में मिल जाते हैं। कई होटल सप्ताहांत की तुलना में सप्ताह के बीच में बेहतर मूल्य पर रूम देते है क्योंकि इस टाइम भीड़ कम होती है।

ट्रैवल एजेंट की मदद लें

ट्रैवल एजेंटों के पास बहुत से विशेष ऑफर होते हैं। जो एक आम इंसान को नहीं मिल सकते हैं। ऐसे में होटल बुकिंग में उनकी सलाह काफी मायने रखती है। वे आपको सलाह दे सकते हैं कि आपके लिए किस प्रकार का यात्रा बीमा सबसे अच्छा हो सकता है।

लो सीजन में बुकिंग

अगर आपको यह फर्क नहीं पड़ता है कि आप किस सीजन में यात्रा कर रहे हैं। ऐसे में लो सीजन काफी अच्छा साबित हो सकता है। इस टाइम पीरियड में शाम के समय जल्दी होटल में रूम बुक कराने पर कम पैसे में बुकिंग हो जाती है क्योंकि उस समय रूम खाली होते हैं।

रिजर्वेशन वाली वेबसाइट

अधिकांश लोगों को लगता है कि होटल में कॉलिंग के जरिए उनके यहां के रेट पूछे जा सकते हैं।

जब कि इसकी अपेक्षा अगर रिजर्वेशन वाली वेबसाइट पर जाकर वहां पर होटल की बुकिंग कंफर्म करे तो बेनिफिट्स मिल सकते हैं।

इससे यहां पर आपको अच्छे प्राइस पर होटल मिल सकते हैं।

rwjdjhgkshcsjkstxkjh

हमारा देश भले दुनिया के उन कुछेक देशों में है जो आतंकवाद से लगातार जूझ रहे हैं, लेकिन दुनिया के स्तर पर इस समस्या को काफी हद तक हल हुआ मान लिया गया है, या कम से कम इसे सबसे बड़ी चिंताओं में शामिल होने लायक नहीं माना जा रहा। चिंताओं की प्राथमिकता में वित्तीय संकट, साइबर हमले और सामाजिक अस्थिरता भी हैं, लेकिन बेरोजगारी के बाद जो दूसरा सबसे बड़ा खतरा इन बिजनेस लीडर्स को डराए हुए है, वह है संक्रामक बीमारियों का फैलाव। अभी की स्थितियों को देखते हुए पहले तो कोरोना वायरस के जाने को लेकर ही दुविधा बनी हुई है। फिर उसके आगे यह आशंका भी निराधार नहीं है कि आने वाले समय में ऐसे अन्य रोगाणुओं के हमले भी मनुष्यों को झेलने पड़ें। देश में बेरोजगारी का बढ़ा हुआ स्तर हमारे लिए गंभीर चिंता का विषय बना हुआ है, लेकिन यह समस्या भारत तक ही सीमित नहीं है। वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम (डब्ल्यूईएफ) के ताजा सर्वे में इसे दुनिया के सामने अगले 1 वर्षों की सबसे बड़ी चिंताओं में पहले स्थान पर पाया गया है। सर्वे में 127 देशों के 12,12 बिजनेस लीडर्स को शामिल किया गया। यह सर्वे डब्ल्यूईएफ की उस ग्लोबल कॉम्पिटिटिव रिपोर्ट का हिस्सा है जिसे अगले महीने रिलीज किया जाना है। दिलचस्प बात है कि इस सर्वे में आतंकवाद को दुनिया के सामने मौजूद दस सबसे बड़ी चुनौतियों में भी जगह नहीं मिली है। बहरहाल, यह बात भी ध्यान देने लायक है कि बेरोजगारी और महामारी की ये दोनों बड़ी चिंताएं एक-दूसरे से उतनी अलग नहीं हैं। बेरोजगारी के अप्रत्याशित रूप से बढ़ने के पीछे कोरोना वायरस का फैलाव रोकने के लिए किए गए लॉकडाउन का सीधा हाथ है। इसके अलावा ऑटोमेशन और ग्रीन इकॉनमी की तरफ बढ़ने से भी रोजगार के कई स्रोत समाप्त हुए हैं या कमजोर पड़े हैं। इस संदर्भ में ऑक्सफैम और डिवेलपमेंट फाइनेंस इंटरनैशनल (डीएफआई) की ताजा रिपोर्ट भी गौर करने लायक है जिसमें कहा गया है कि अभी की तबाही को हम पूरी तरह से प्रकृति के मत्थे मढ़कर निश्चिंत नहीं हो सकते। रिपोर्ट के मुताबिक, वायरस भले मानव निर्मित न हो, पर जो कहर इसने दुनिया भर में ढा दिया उसके लिए हमारी सरकारों की गलत प्राथमिकताएं जिम्मेदार हैं।

कोरोना काल में चुनाव की बदली चाल

दलों में दरार, नेताओं में तकरार, किसी का किसी की अगुआई में चुनाव लड़ने से इनकार, और किसी का किसी से नाता बरकरार। इन गिनी-चुनी चुनावी तुकबंदियों को दरकिनार कर दें तो चुनावी बिगुल बजने के बावजूद वातावरण में निल बटे सन्नाटा है।

ढोल-नगाड़े, गाजा-बाजा, पोस्टर, बैनर, झण्डा, बैज, हेंडबिल, कैलेंडर आदि-इत्यादि सब गायब हैं। और रही बात मुद्दों की, तो जनाब, बतर्ज कसमें-वादे-प्यार-वफा मुद्दे भी बस बातें हैं, बातों का क्या!

महामारी के चलते सत्तर से भी अधिक देशों में चुनाव टाल दिये जाने के बावजूद 'बिहार में इलेक्शन बा' के पीछे चुनाव आयोग का दावा है कि नागरिकों को चुनाव के लोकतांत्रिक अधिकार से वंचित नहीं किया गया। ऐसे विकट चुनावी माहौल में नामांकन के दौरान महज़ 'दो गाड़ियों और दो लोगों का साथ' जैसी कई छोटी-बड़ी पाबन्दियां, नेताओं के साथ है तो नाइंसाफी, लेकिन सर-माथे पर। वैसे नटवरलाल में अमिताभ अगर किसी नेता के किरदार में होते तो यकीनन उनसे यह डायलॉग ज़रूर बुलवाया जाता, 'ये इलेक्शन भी कोई इलेक्शन है लल्लू!'

जिस तरह पढ़ाई-लिखाई में कमज़ोर, किसी कामचोर बच्चे की कापियां-किताबें एकदम नयी-नकोर पड़ी रहती हैं, उसी तरह किसी निकम्मे, कामचलताऊ सत्तारूढ़ दल का बरसों पुराना चुनावी घोषणा-पत्र कभी भी उलट-पलट कर देख लीजिये, एकदम नया-नवेला ही दिखाई पड़ता है। बोले तो वर्जिन ब्यूटी! जैसे परीक्षा में फेल होने वाले विद्यार्थी को नयी किताबें खरीदने की ज़हमत नहीं उठानी पड़ती, ठीक वैसे ही वोटरों की उम्मीदों पर खरा न उतरने का एक लाभ यह भी होता है कि संबन्धित दल को नया घोषणा पत्र डिज़ाइन करने की कवायद ही नहीं करनी पड़ती। मौजूदा हालात में ऐसा होने पर पुराने घोषणा पत्र को सेनेटाइज़ करने मात्र से काम चल जाएगा। वैसे भी वादों की कोई एक्सपायरी डेट थोड़े ही होती है! वे नेता जो जनता को अपना मुंह तक दिखाने लायक नहीं बचे, ऑफलाइन प्रचार के दौरान मास्क लगाकर अपनी तथाकथित बची-खुची इज्ज़त बचाने में कामयाब हो सकते हैं।

खुदा-न-खास्ता अगर कोई नेता हाल-फिलहाल कोरोना पॉज़िटिव हो जाये और इस बात की खबर विरोधी दल को लग जाए तो उसके खिलाफ यह कहकर दुष्प्रचार किए जाने की संभावना है कि 'भाइयो और बहनो, जिस नेता की खुद की इम्युनिटी स्ट्रांग नहीं है, वो जनता की रक्षा क्या खाक करेगा' कल तक भोली-भाली जनता को फ्री-बिजली, फ्री-पानी आदि का लारा-लप्पा लगाए रखने वाले नेता जनता को कोरोना का टीका फ्री में लगवाने का लॉलीपॉप देते फिरें तो इसमें आश्चर्य कैसा कोरोनाकालीन चुनावों में इतना सब तो चलता ही है जी!

संसद से सड़क तक किसान का आना

सहीराम

किसान सड़कों पर क्या उतरे जी, संसद से लेकर टेलीविजन तक हर जगह छा गए। वे ऐसे नहीं छाए जैसे कहा जाता है कि छा गए गुरु! या छा गए उस्ताद! या छा गए पाजी! वे कोई सेलिब्रिटी नहीं जो ऐसे ही छा जाएं! सेलिब्रिटी नशा करे तो भी छा जाता है और आत्महत्या करे तो भी छा जाता है। लेकिन आत्महत्या करके किसान नहीं छा पाए। न नेताओं की बोली में और न ही टेलीविजन की होली और दीवाली में। अलबत्ता उन्हें झोली में लेने की कोशिशें सबने कीं, उनका हिमायती बनकर, कभी हल उठा कर तो कभी खराब हुई गेहूं की बालियां उठाकर।

किसान की आदत है कि वह सड़क पर नहीं उतरता। उसे खेत रास आता है, खेत में जाने के लिए पगडंडी रास आती है। हालांकि, सड़क पर तो नेता भी कितने उतरते हैं? उतरते हैं तो बस रोड शो करते हैं। रोड शो करते हैं और छा जाते हैं। कहीं आने-जाने के लिए वे सड़क मार्ग से ज्यादा वायु मार्ग का ही इस्तेमाल करते हैं। वायु मार्ग को वायु निष्पादन न समझा जाए, उसके लिए बाबा ने आसन बता रखा है। सड़क मार्ग से फसलें देखने में उनकी वैसे भी उतनी रुचि नहीं होती, जितनी वायु मार्ग से बाढ़ देखने में होती है। वे बाढ़ देखते हैं और छा जाते हैं। वहां तर माल जो होता है। सड़क पर तो सेलिब्रिटीज भी नहीं उतरते। वे सड़क पर उतरने से अच्छा पार्टी में जाना पसंद करते हैं और छा जाते हैं।पर इस बार किसान खेत में नहीं गया। सड़क पर उतर आया। उसे पता नहीं यह कैसे समझ में आया कि खेत बचाने के लिए खेत में जाने से अच्छा है, सड़क पर उतरना। बस वह सड़क पर उतरा और संसद से लेकर टेलीविजन तक हर जगह छा गया। टेलीविजन वाले बेचारे हतप्रभ! अरे यार यह कहां से आ गया? इसे तो हमने पर्दाबदर कर रखा था। टेलीविजन के पर्दे से तड़ी पार कर रखा था। टेलीविजन वाले सेलिब्रिटीज को मनाते ही रह गए। आपको थोड़ा सा इंतजार करना पड़ेगा। यार ये किसान आ गए हैं। थोड़ी फुटेज तो देनी पड़ेगी। आखिर ये हमारे अन्नदाता है।

फिचर्स/विविध

कभी-कभी शराब पीना भी होता है अच्छा

कभी कभी शराब को पीना लोग अच्छा नहीं मानते और हमारे भारत में तो लोग इसे घर-परिवार और जिंदगी को बरबाद कर देने वाला समझते हैं। हमने आपको बोल्डस्काई के माध्यम से शराब पीने के कई अच्छे, बुरे और शराब से छुटकारा दिलाने के कुछ टिप्स भी बताएं हैं। शराब असल में उतनी बुरी नहीं होती जितनी कि लोग इसके बारे में प्रचार करते फिरते हैं।

शराब को अगर सीमित रूप में पिया जाए तो यह स्वास्थ्य को निखार सकती है। शराब का अत्यधिक सेवन लाभ से अधिक हानि पहुँचाने में सक्षम है। अत: शराब के पारखियों को सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है।

क्या आप जानते हैं कि बियर हमारी हड्डियों को मजबूत बनाती है या फिर वोदका पीने से हमारे दिमाग को आराम मिलता है और यह हमें अनिद्रा से बचाता है। शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि शराब सेवन के कुछ आश्चर्यजनक लाभ भी हैं। निम्नलिखित अनुच्छेद शराब सेवन के लाभ को समझाएगा।

बियर 1. बियर में उच्च सिलिकॉन पदार्थ होने के कारण यह हड्डियों के उचित स्वास्थ्य को बनाये रखने में सहायता करता है। अध्ययन यह दर्शाते हैं कि बियर का सेवन दैनिक रूप से करने पर हड्डियों के घनत्व में वृद्धि होती है।

बियर 2. बियर का सेवन करने पर हृदय से संबंधित खतरों (बीमारियों) में 31त्न कमी आती है। दैनिक रूप से बियर पीने पर एलडीएल कोलेस्ट्रोल का स्तर कम होता है एवं धमनियां स्वच्छ रहती हैं।

बियर 3. बियर पीने वालों में, बियर न पीने वालों की अपेक्षा, गुर्दे में पत्थर होने का खतरा 40त्न कम होता है। ऐसा माना जाता है कि बियर में उपस्थित पानी उच्च मात्रा के कारण गुर्दे के निर्जलीकरण का ख़तरा कम होता है और गुर्द में पत्थर नहीं बनता।

बियर 4. बियर के मध्यम किन्तु नियमित सेवन से मधुमेह का खतरा अधिकतर 25त्न कम हो जाता है क्योंकि बियर इंसुलिन की संवेदनशीलता को बढ़ाकर रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है।

वोदका 1. यह निद्रा प्रेरक की तरह कार्य करता है, दिमाग को आराम देता है एवं तनाव के स्तर को कम करता है।

वोदका 2. यह अत्यधिक प्रभावी घरेलू कीटाणुनाशक है और अधिकतर घावों को साफ़ करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इसके एंटीसेप्टिक गुण त्वचा से विषाक्त पदार्थों को हटाने में एवं कीटाणुओं को मारने में सहायता करते हैं।

वोदका 3. वोदका में शराब की इतनी पर्याप्त मात्रा है जो बुखार के दौरान शरीर से गुप्त (अव्यक्त) उष्मा को बाहर निकालने में सहायक होती है।

वाइन 1. हाल ही के अनुसंधानों द्वारा यह साबित हुआ है कि रेड वाइन का सेवन अच्छी तरह सोने में सहायता करता है। रेड वाइन अनिवार्य रूप से मिलेटोनिन के उत्पादन में सहायता करता है। मिलेटोनिन एक एंटीओक्सिडेंट है जो न केवल नींद के चक्र को नियमित करता है बल्कि कैंसर एवं उम्र को बढ़ने से भी रोकता है।

वाइन 2. रेड वाइन का एक मुख्य घटक रेस्वेराट्रोल है जो बीमारियों के खिलाफ प्रतिरक्षा निर्माण करने में सहायता प्रदान करता है और इस प्रकार लंबा जीवन जीने में मदद करता है। केवल यही नहीं, यह मनोभ्रंश एवं अल्जाइमर बीमारी को रोकने में भी सहायता करता है। यह सूजन को कम करने, एलडीएल कोलेस्ट्रोल का स्तर कम करने एवं संपूर्ण शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार के लिए भी जाना जाता है।

वाइन 3. रेड वाइन के एक ग्लास में पर्याप्त रेस्वेराट्रोल एवं एंटीऑक्सीडेंट होते हैं जो हृदय की बीमारियों के खतरे को कम करते हैं।

फेशन के साथ हो आपके प्रोफेशनल आउटफीट

हर कोई चाहे वे ऑफिस जाने वाली महिला हो या घरेलू महिला हर कोई ट्रेण्डी नजर आना चाहता है। विभिन्न अवसरों परन उसके द्वारा पहने गए ड्रेसेज से उनकी मानसिकता का पता चलता है। आज के समय की मांग ऐसी है कि हर कोई व्यक्ति ऑफिस पर खुद को अच्छा प्रोफेशनल साबित करना चाहता है। हर कोई एकदम परफेक्ट दिखना चाहता है और इसके लिए वह जी-जान से पूरी मेहनत भी करता है। लेकिन शायद मेहनत ही काफी नहीं हैं, इसके लिए आपको फैशन के हिसाब से भी अपने को परफेक्ट होना चाहिए। हर ऑफिस के अपने कुछ नियम कायदे होते हैं और आपको उसके अनुसार अपने को ढालना पडता है। अगर ऑफिस में ड्रेस कोड है। तब तो कोई परेशानी नहीं हैं, लेकिन अगर ऐसा नहीं है। तो आप अपने लिए ऐसे ड्रेसज को चयन कर सकती हैं। जो आपको स्मार्ट लुक दें। साथ ही ड्रेसेज वही चुनें जो आपकी खामियों को छुपाए एवं बॉडी के शेप को उभारे। किसी ड्रेस में कॉन्शियस रहते हैं। तो किसी में कंफटेंबल, या फिर किसी रंग से एनर्जी मिलती है, तो किसी रंग से डाउन महसूस करती हैं। जिससे आपकी पर्सनैलिट पर अधिक प्रभाव पडता है। इसलिए आप जिस ड्रेस में परफे क्ट हों,उसे अपनी आउटफिट में शामिल करें। चाहे वो मेन हो या वुमन। ऑफिस में उसकी एक अच्छी इमैज बनी ही रहें। साथ ही आपकी ड्रेस ट्रडिशनल या बोरिंग बिलकुल नहीं होनी चाहिए, बल्कि नया फैशन स्टेटमेंट हो जिससे वुमन का आत्मविश्वास तो बढा ही साथ ही कंफर्टेबल भी होना चाहिए और पहनने में उसका स्वभाव, पसंद, स्टाइल, रूचियों और दृष्टिकोण का पता चलता हों, आप को तो पता ही होगा कि ड्रेसेज व्यक्ति का थोडा बहुत पर्सनल टच जरूर देता हैं। ग्रेसफुल ऑफिस वेयर व्यक्तित्व को उभारता है। ड्रेस ऐसी हो जिसमें एनर्जेटिक वाइब्रेंट कलर्स, न्यूपैटर्न और कट्स हो। बदलते समय में फैशन ट्रेण्ड के अनुसार ऑफिस वेयर कैसा हो तो आइए जानते हैं। कॉटन, सिल्क, शिफॉन और जॉर्जेट की बेल्ट साडी पहनने सकती हैं। सिंपल पर्ल सेट, ब्लैक ब्राउन बेल्टस, फॉर्मल पर्स, स्कार्फ, ब्लैक शू, रिस्ट वॉच, आदि आप पहन सकती हैं। फ्रेश कलर्स और ग्रेसफु ल कट्स वाले विजनेस सूट्स, जैकेट्स, ट्राउजर्स, फॉर्मल शट्र्स और शॉर्ट कुर्ता, टयूनिक।

बदलते मौसम में करें आंखों की देखभाल

ऐसे में चिकित्सक त्वचा पर विशेष ध्यान देने और सफाई पर जोर दे रहे हैं, जिससे त्वचा सम्बन्धी रोगों से बचा जा सके और ये फैले नहीं वहीं इस मौसम में सबसे ज्यादा आंखों पर ध्यान देने की सलाह भी विशेषज्ञ दे रहे हैं।

चिकित्सकों के मुताबिक बदलते मौसम में अक्सर लोग अपनी आंख को लेकर लापरवाह हो जाते हैं, जो कभी-कभी बड़ी समस्या की वजह बन जाता है। इस मौसम में आंखों में वायरल संक्रमण होने का खतरा ज्यादा रहता है। चिकित्सकों के मुताबिक कुछ छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखकर इन परेशानियों से बचा जा सकता है।

चिकित्सकों के मुताबिक बैक्टीरिया, वायरस और दूसरी एलर्जी गर्मियों और बरसात के मौसम में पनपती है जो आंखों को अपना शिकार बना सकती है। अगर ऐसा संक्रमण हो जाए तो फौरन डॉक्टर की सलाह लें। इसे अनदेखा करने पर आंखों के कार्निया को नुकसान पहुंच सकता है इन संक्रमण से बचने के लिए कुछ उपाय राहत दे सकते हैं।

आंखों को मलने से बचें और किसी दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ तौलियां न लें। हाथों को हमेशा साफ रखें। अपने 'कॉन्टैक्ट लैंस' को अच्छे से साफ करके उपयोग में लाएं। धूप निकलने पर चश्मे का इस्तेमाल करें, चश्में केवल धूप से ही नहीं बल्कि धुएं और गंदगी से होने वाली एलर्जी से भी बचाते हैं। पालतू जानवरों को न छूएं और उन्हें बिस्तर पर न चढ़ने दें। आंखों के मेकअप का सामान किसी के साथ न बांटे। गर्मी और बरसात के दौरान आंखों की सफाई पर विशेष ध्यान दें।

प्रेमसुख धाम में णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप कराया

नगर संवाददाता

देहरादून। जैन मिलन परिवार देहरादून द्वारा राजेश मुनि जी महाराज साहब ठाणे 2 के सानिध्य में प्रेमसुख धाम में णमोकार महामंत्र का सामूहिक जाप कराया गया। जिसमे सभी वीर वीरांगनायें उपस्थित रहीं। भारतीय जैन मिलन द्वारा 3 सितंबर को आयोजित मासिक मिलन के लिए जैन ध्वज एवं जय जिनेंद्र पट्टी का वितरण जैन मिलन पारस की ओर से किया गया।

भारतीय जैन मिलन की केंद्रीय महिला संयोजिका मधु सचिन जैन ने बताया कि राजेश मुनि की महाराज ने अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमारे जैन धर्म मे णमोकार महामंत्र का विशेष महत्व है, जो सभी कष्टों को हरने वाला है। ये सभी मंत्रों का महामंत्र है हमारे आगामी पर्युषण पर्व सभी के लिए मंगलमय हो। इस अवसर पर जैन भवन मंत्री और सौरभ सागर समिति द्वारा किये गए कार्यों

की भी सराहना की गई। राष्ट्रीय महामंत्री वीर नरेश चंद जैन कहा कि भारतीय जैन मिलन समय–समय पर सेवा कार्य और धार्मिक कार्यों में संलग्न रहती हैं जिससे सभी धर्म प्रेमियों धर्म प्रभावना की लहर बहती रहती है। वर्षायोग में जहाँ एक तरफ जहां सारे कार्यकाज मंदे पड़ जाते हैं वहीं सभी धर्मप्रेमी बंधु धार्मिक आयोजन कर देव, भक्ति गुरुभक्ति, जिनभक्ति में तल्लीन हो जाते है ओर पुण्यार्जन कर अपना जीवन सफल बनाते है। पर्यूषण पर्व की स्वागत तैयारी 3 सितंबर को घर घर जैन ध्वज लगाए जाएंगे/गौशाला में दाना चारा दिया जाएगा। राष्ट्रीय चेयरमैन सचिन जैन, आशीष जैन, संदीप जैन, सुनीता जैन, वीरेश जैन, राहुल जैन, अजय जैन, पंकज जैन, अलका जैन, शेफाली, रश्मि, कविता, रानी, अशोक जैन, डॉ संजीव कुमार, मदन जैन, संदीप जैन क्षेत्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आदि लोग उपस्थित रहे।

डा. वाचस्पति मैठाणी के नाम पर हो बालगंगा महाविद्यालय का नाम

–शिक्षाविद् डॉ वाचस्पति मैठाणी की 72वीं जयंती पर बेबिनार का आयोजन

नगर संवाददाता

देहरादून। शिक्षाविद डा.वाचस्पति मैठाणी की 72वीं जयंती पर स्मृति मंच द्वारा संस्कृत का महत्व एवं डॉ वाचस्पति मैठाणी का बहुआयामी व्यक्तित्व विषय पर एक बेबीनार कार्यक्रम का आयोजन गया। जिसमें देश के विभिन्न क्षेत्रों के विद्वानों ने अपने विचार रखे। वक्ताओं ने डॉ मैठाणी द्वारा स्थापित महाविद्यालय को उनके नाम पर रखने की मांग की। इस अवसर पर स्मृति मंच के संरक्षक पूर्व शिक्षा मंत्री मंत्री प्रसाद नैथानी ने कहा कि डॉ मैठाणी ने शिक्षा एवं संस्कृत भाषा के उन्नयन के लिए जो अतुलनीय कार्य किए आज उन कार्यों को आगे बढ़ाने की जरूरत है तभी हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो देवी प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि डॉ मैठाणी ने संस्कृत भाषा के लिए विशेष कार्य किए और देहरादून में अपने घर पर ही विश्व के पहले प्राथमिक संस्कृत

विद्यालय की स्थापना के साथ साथ स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षण संस्थाएं खोली। संस्कृत भाषा को उत्तराखंड की द्वितीय राजभाषा बनाने में डॉ मैठाणी की अहम भूमिका रही। कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्कृत शिक्षा निदेशक शिव प्रसाद खाली ने कहा की संस्कृत शिक्षा विभाग डॉ मैठाणी जी के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उत्तराखंड संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ आनंद भारद्वाज ने कहा कि डॉ मैठाणी ने बिनोवा भावे की तरह अपना सामान्य जीवन जी कर शिक्षा की जो मशाल जलाई है उसको आगे बढ़ाने के लिए हम सबको कार्य करना होगा। समाजसेवी श्रीमती सुमित्रा धूलिया ने कहा कि डॉ मैठाणी ने बालिकाओं में सुसंस्कार पैदा करने के लिए पहाड़ के दुर्गम क्षेत्र में अलग से बालिका स्नातकोत्तर संस्कृत महाविद्यालय के साथ साथ अन्य महाविद्यालयों की भी स्थापना की जिसका लाभ उन बालिकाओं को मिलेगा जो किसी कारणवश घर से दूर नहीं जा पाती हैं।पूर्व आयुर्वेद निदेशक डॉ मायाराम उनियाल ने कहा कि डॉ मैठाणी ने अपना जीवन शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं शैक्षणिक संस्थाओं को खोलने के लिए समर्पित कर दिया। प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाजसेवी शंभू प्रसाद रतूड़ी ने राज्य सरकार से डॉ मैठाणी द्वारा स्थापित बालगंगा महाविद्यालय सेंदुल का नाम डॉ वाचस्पति मैठाणी के नाम पर रखने की मांग की। प्रसिद्ध गांधीवादी विजय कुमार हांडा ने कहा कि डॉ मैठाणी शिक्षा के साथ–साथ समाज के गरीब तबके के उत्थान के लिए भी समर्पित रहे।

महाराज के नेतृत्व में मुख्यमंत्री से मिला माध्यमिक शैक्षणिक संघ का शिष्टमण्डल

नगर संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड माध्यमिक शैक्षणिक संघ का एक शिष्टमंण्डल उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज के नेतृत्व में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मिला। कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज के नेतृत्व में मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मिले उत्तराखंड माध्यमिक शैक्षणिक संघ के प्रतिनिधि मंडल ने शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की वेतन बिसगतियों को दूर करने तथा राजकीय कर्मचारियों की भांति अवकाशों के बदले नगदीकरण जैसे 10 मांगे रखी गई। प्रतिनिधि मंडल से हुई वार्ता के दौरान मुख्य मंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जल्द समाधान करने का आश्वासन दिया गया। उत्तराखंड के जनपद पौड़ी के जिला अध्यक्ष दर्शनसिंह रिगोंडा

के सानिध्य में उत्तराखंड माध्यमिक शैक्षणिक संघ का शिष्टमंडल प्रदेश के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से मिला और शिष्टमडल द्वारा कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज जी की अगुवाई में मुख्यमंत्री को अपनी मांगों का ज्ञापन सौंपा गया। मुख्यमंत्री द्वारा आश्वस्त किया गया कि जल्द ही उनकी मांगों पर विचार किया जाएगा। मुख्यमंत्री से मिलने वाले शिष्टमंडल में कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज के साथ प्रदेश अध्यक्ष बीएस पंवार, महामंत्री संजय गग़, देहरादून मण्डल के अध्यक्ष सहित जनपद पौड़ी गढ़वाल के जिलाध्यक्ष दर्शन सिंह रिगोंडा महामंत्री महेन्द्रसिह, बिजयनन्द डुगरियाल, राकेश नेगी, हरेन्द्र खनतवाल, भोलासिहं नेगी और जयदेव असवाल शामिल थे।

मंत्री गणेश जोशी ने टीकाकरण केंद्र का निरीक्षण किया

देहरादून। कैबिनेट मंत्री एवं मसूरी विधायक गणेश जोशी ने रविवार को वार्ड नं० 10, डोभालवाला स्थित सामुदायिक भवन परिसर में टीकाकरण केंद्र का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने टीकाकरण की पारदर्शिता सुनिश्चित की और टीकाकरण की व्यवस्थाओं का जायज़ा लिया।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि कोरोना महामारी के खिलाफ वैक्सीन सबसे कारगर हथियार है। उन्होंने उपस्थित लोगों से दूसरे लोगों को भी टीकाकरण कराने हेतु प्रेरित करने की अपील की। साथ ही उन्होंने क्षेत्रवासियों से कहा कि कोरोनाकाल के इस विषम दौर में सरकार जनता के साथ खड़ी है और जनता की हरसंभव मदद को प्रयासरत है। कैबिनेट मंत्री ने बताया कि प्रदेश सरकार का पूरे प्रदेश में 18 वर्ष से अधिक आयु वाले लोगों का दिसम्बर माह तक शत–प्रतिशत टीकाकरण करने का लक्ष्य है।

मसूरी घूमने आ रहे पर्यटकों की कार दुर्घटनाग्रस्त, तीन घायल

देहरादून, स्टाफ रिपोर्टर। देहरादून–मसूरी मार्ग पर एक कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बताया जा रहा है कि हादसे में तीन लोगों को हल्की चोटें आई हैं, जिन्हें स्थानीय लोगों ने कार से बाहर निकाला।

मसूरी के किंक्रेग से गांधी चौक जाते समय पर्यटकों की कार नियंत्रित होकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। घटना बीते रात की बताई जा रही है। कार गिरने की आवाज सुनकर स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और कार सवार तीनों युवकों को बाहर निकाला। गनीमत रही कि कार में सवार किसी को भी कोई गंभीर चोटें नहीं आई। कार सवार युवक ने बताया कि वह लोग दिल्ली से मसूरी घूमने के लिए आ रहे थे। तभी सामने से आ रहे वाहन और कोहरे से उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। जिस कारण कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। मसूरी में विगत दो हफ्तों से बारिश के साथ ही कोहरा छाया हुआ है। कोहरे से विजिबिलिटी कम होने से हादसों का खतरा बना हुआ है। साथ ही कोहरे छाने से वाहन चालकों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

महिला परीक्षण शिविर व बाँझपन जाँच शिविर का आयोजन

ऋषिकेश। इनरव्हील क्लब व प्रसाद हॉस्पिटल के संयुक्त तत्वावधान में निशुल्क महिला परीक्षण शिविर व बाँझपन जाँच शिविर का आयोजन रेलव रोड स्थित प्रसाद हॉस्पिटल में किया गया। शिविर का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर, चारु कोठारी, डॉक्टर सावित्री उनियाल एवं बीना जोशी एवं डॉक्टर रितु प्रसाद ने किया। कार्यक्रम संयोजक डा. हरि ओमप्रसाद ने बताया कि आजकल के पुरुष प्रधान समाज में महिलाएँ अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग नहीं होती है, वो अपनी बीमारी को खर्चे की वजह से छुपाती रहती है और जब उन्हें इस बीमारी का एहसास होता है। तब वह काफ़ी आगे स्टेज तक पहुँच चुकी होती है। डॉक्टर प्रसाद ने बताया कि इस शिविर के माध्यम से ग़रीब तबके की उन सभी महिलाओं के लिए परीक्षण व तमाम जाँचें निशुल्क की गई है। डा. रितु प्रसाद ने बताया कि इस शिविर में महिलाओं में सबसे प्रमुख पाए जाने वाला बच्चेदानी के मुँह का कैंसर को बहूत प्रारंभिक स्टेज में पता लगाने के लिए अमेरिकन मशीन डिजिटल विडीओ कोल्पोस्कोपि द्वारा जाँच की जाएगी और यह पूरी जाँच निशुल्क है। जिन महिलाओं को पेट में दर्द, महामारी में शिकायत व सफ़ेद पानी की शिकायत है उनके लिए निशुल्क अल्ट्रसाउंड का परीक्षण किया जाएगा। इसके साथ ही जिन महिलाओं को बाँझपन की शिकायत है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक
प्रदीप चौधरी
द्वारा
एल.के प्रिटर्स,74/9,आराघर,देहरादून
से मुद्रित
व जाखन जोहड़ी रोड, पी.
ओ–राजपुर, देहरादून से प्रकाशित।
संपादकः प्रदीप चौधरी

सिटी कार्यालयः
शिवम् मार्केट, द्वितीय तल
दर्शनलाल चौक, देहरादून।
फैक्स नं०-
0135-2650558
(M) 9319700701
pagethreedaily@gmail.com
आर.एन.आई.नं0
UTTHIN\2005\15735
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून ही मान्य होगा।